आमंत्रण-पत्र - संगोष्ठी

विषय : घातक पर्यावरणीय एवं मानवीय चुनौतियाँ, कारण और समाधान

प्रिय साथियों,

आज मानव का प्रकृति के साथ सन्तुलन बिगड़ रहा है। दूसरी तरफ मानव का मानव के साथ संबंध भी संतोषजनक नहीं रहा है।

प्रकृति के साथ असन्तुलन की स्थिति ग्लोबल वार्मिंग (या मौसम परिवर्तन) की समस्या में प्रकट हो रहा है। वैज्ञानिक कहते हैं कि इस समस्या की परिणति पृथ्वी पर सम्पूर्ण जैव-जीवन यानि वनस्पति, जीव-जन्तु और मनुष्य 21 वीं सदी के अंत तक इस पृथ्वी ग्रह पर से हमेशा के लिए विलुप्त हो जाएंगे। जैसे साढ़े छः करोड़ वर्ष पहले डायनासोर तथा उस समय की वनस्पति व अन्य जीव नष्ट हुए थे। उस समय इसका कारण प्राकृतिक था। लेकिन ग्लोबल वार्मिंग से जैव-जगत की समाप्ति का कारण अब विश्व कारपोरेट पूंजीवादी दर्शन और उसकी वर्तमान सामाजिक व्यवस्था बनने जा रही है।

मानव और मानव के बीच रिश्तों की असंतुष्टि, रिश्तेदारों में बढ़ती हिंसा यानि ब्लड रिलेशन (अथवा खून के रिश्तों) में मारकाट, हत्या और घिनौनी हरकतें बढ़ने में देखी जा सकती है।

समाज में पुरानी समस्याएँ—महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार, जाति और साम्प्रदायिक आधार पर हिंसा, दमन और भेदभाव, गरीबी, मेहनत करने वालों की दुर्दशा—लगातार जारी है; साथ ही नई समस्याएँ यानि परमाणु, रासायनिक, जैविक युद्ध का खतरा, भोजन उत्पादन की प्रणाली अर्थात् कृषि का रासायनिकरण और अब इसमें जी.एम. (जनेटिकली मोडिफाइड) तकनीक का प्रयोग करने से अनाज, दालों, तेल, बीज, दूध, फल, सब्जियाँ, सभी जहरीले बन चुके हैं। जहरीले भोजन, सीमा से ज्यादा मात्रा में रेडीएशन से नई-नई बीमारियाँ पनप रही है। प्राकृतिक संसाधन घट रहे हैं, भूमि के उपजाऊपन में लगातार कमी हो रही है, आगे पानी और हवा अत्यन्त तेजी से प्रदूषित हो रहे हैं।

आम तौर पर हम कह सकते हैं कि पर्यावरणीय गिरावट और मनुष्य समाज में अमानवीयकरण बढ़ रहा है, स्वार्थ बढ़ रहा है, सामाजिकता घट रही है, इन्सानियत सदा के लिए गायब हो रही है।

जानवर और मनुष्य में फर्क यह है कि मनुष्य में सामाजिकता का गुण ज्यादा है, स्वार्थ, जैविक या व्यक्तिगत आवश्यकता की पूर्ति मनुष्य सामाजिकता के तहत करता रहा है जब सामाजिकता समाप्त हो जाए और मात्र स्वहित और स्वार्थ प्रमुख बन जाए तो मानव पुनः जानवर की श्रेणी के नजदीक पहुँच जाता है।

ऊपर वर्णित पर्यावरणीय और मानवीय संकट का असर प्रत्येक नागरिक, परिवार, गांव, मोहल्ला या शहर की इकाई, सरकारी विभाग, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सैनिक संगठन, प्रशासन, न्यायालय, देश के भीतर और देशों के बीच, सार्क, यूरोपीयन समुदाय जैसे क्षेत्रीय संगठनों तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं यानि संयुक्त राष्ट्र संघ, आई एम एफ, विश्व बैंक, डब्लू टी ओ आदि सभी पर पड़ रहा है।

इस पर आज दुनिया भर में चिन्तन हो रहा है, इसका कारण और समाधान में कुछ महानुभाव लगे हुए हैं। साथ ही न्यायपूर्ण दुनिया और समता आधारित समाज निर्माण पर उनके विचार एवं गतिविधियों की जानकारी के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। आप महानुभावों से विनम्र निवेदन है कि इस आयोजन में भागीदार बनें; आप इस संगोष्ठी में सादर आमंत्रित हैं।

कृपया पधारें।

संगोष्ठी का स्थान : **गांधी शांति प्रष्ठिान,**
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के हैड ऑफिस के सामने,
नगर निगम कार्यालय के पास, जोधपुर

दिनांक : 13 नवम्बर, 2016, **वार :** रविवार, **समय :** प्रातः 10.30 बजे से दोपहर 2.00 बजे तक

आयोजक :

प्रकृति-मानव केन्द्रित जन आन्दोलन, जोधपुर

सम्पर्क :

टी.सी. जाटोल 9413307433, आर.आर. चौधरी 9414132955, आर.के. मेघवाल 9414081521,
घनश्याम डेमोक्रेट 9414864548, टी.सी. गोसांई 9414196735, शराफत हुसैन 9829095338,
मोहनलाल सेजू 9829205361, बी.आर. जोया 9413387118, जवाहरलाल 9414131481,
भूपेन्द्र लावा 9413461758, धन्नाराम जोगावत 9214505256, मगराज पंवार 9660419600,
भूपेश लावा 9414827518, अमीना, एम.एम. फुलवारी, नितिन त्रिवेदी, अब्दुल सलीम, जयनारायण, ईश्वरलाल